बुद्ध का मार्ग और नारी – एक दार्शनिक विश्लेषण

सिंड्रेला आनंद
शोधार्थी–दर्शनशास्त्र विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया
Email&cindrella0888@gamil-com

सारांशिका

बौद्ध धर्म का उद्देश्य विश्व में करुणा और शांति को स्थापित करना है। बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध हैं। अतः उनका उदेश्य सम्पूर्ण जाति का कल्याण करना था। इसलिए जाती, लिंग आदि भेदों से परे सम्पूर्ण प्राणी जगत के कल्याण की भावना बौद्ध धर्म का मूल बिंदु था।

सर्वप्रथम, उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार जन्म पाता है। जिससे बौद्ध धर्म में पुत्र की अनिवार्यता समाप्त कर दी गयी। बुद्ध ने स्त्रियों को भिक्षुणी जीवन में प्रवेश की अनुमति दी। यह निर्णय पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रति हिन् दृष्टिकोण को बदल कर रख दिया। बुद्ध के जीवन में भी स्त्रियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा उन्हें अपने अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग प्रदान किया।

स्त्रियों के सम्बन्ध में बौद्ध धर्म में दो प्रकार की विचारधारा दृष्टिगोचर होती है जिसका सम्बन्ध महात्मा बुद्ध के विचारों से होता है। जहाँ एक और बुद्ध द्वारा स्त्रियों के प्रति संदेहात्मक वक्तव्य दिए यहीं वहीँ कुछ स्थानों पर बुद्ध स्त्रियों की प्रसंशा करते प्रतीत होते हैं। इन्होने स्त्रियों के संघ में प्रवेश के सम्बन्ध में संकोच प्रदर्शित किया था। परन्तु मौसी गौतमी और आनंद के प्रयास से उन्होंने स्त्रियों को संघ में प्रवेश करने की अनुमति संकोच करते हुए प्रदान की। बौद्ध धर्म के दार्शनिक विश्लेषण से यह ज्ञात होता है की प्रारम्भ में स्त्रियों को भिक्षुणी जीवन में प्रवेश की अनुमति न देने के पीछे की मूल चिंता समाज को लेकर थी। क्योंकि भिक्षुणियों को समाज का उचित समर्थन था। अतः बुद्ध समाज के विरुद्ध जाकर भिक्षुणी संघ की स्थापन करते तो भिक्षुणियों को समाज के विरोध का सामना करना पड़ता और उन्हें भिक्षा तक प्राप्त नहीं होती उनका जीवन कष्टदायी हो सकता था। इन बातों के पीछे की मूल वजह यह है की भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है। ऐसे में स्त्रियों को पूर्ण स्वंतंत्रता प्राप्त नहीं थी। बुद्ध का उद्देश्य था समाज के उचित समर्थन के साथ कार्य करना क्योंकि भिक्षु संघ का जीवन भिक्षा और दान पर ही निर्भर था। और ऐसा भी नहीं था कि भिक्षु संघ की स्थापना कोई नया कार्य था। इससे पहले भी साधु साध्वी का अस्तित्व समाज में विद्यमान थे। लेकिन भिक्षुणी संघ का अस्तित्व जैन धर्म को छोड़कर अन्य किसी धर्म में दृष्टिगोचर नहीं होता है। अतः भिक्षुणी संघ की स्थापना करके महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों के जीवन को एक नयी दिशा प्रदान की। जिसका प्रमाण थेरीगाथा से लिया जा सकता है। बौद्ध धर्म त्रिपिटक ग्रंथों में भी नारियों की कार्य–कुशलता की सरहाना की गयी है। त्रिपिटक के सुत्तपिटक के प्रथम दीघ निकाय के लक्खन सुत्त में चक्रवर्ती राजाओं के सात रत्नों में से एक स्त्री रत्न का भी उल्लेख है। सत्य तो यह है की बौद्ध धर्म ने महिला सशक्तिकरण की नींव रखी।

मूल शब्द : बौद्ध धर्म, करुणा और शांति, पितृसत्तात्मक समाज, भिक्षुणी जीवन, त्रिपिटक, सुत्तपिटक, स्त्री रत्न,महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना

।। नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।।

स्त्री समाज की आधारशिला होती है तथा किसी भी धर्म या समाज में उसकी महत्ता का ज्ञान उसकी सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता पर निर्भर करता है। प्राचीन भारत में जब भी नारी की स्थिति का आकलन किया गया तो उसे केवल राष्ट्रवादी लेखन की परम्परा की दृष्टि में रखा गया। धरातल पर आज भी आधुनिक स्त्री विमर्श और लैंगिक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारत में नारी को हाशिए पर खड़ा पाया गया है। इस दृष्टि से प्राचीन भारत में नारी की स्थिति के आकलन की पुनः आवश्यकता प्रतीत होती है।

बौद्ध धर्म का उद्देश्य विश्व में करुणा और शांति को स्थापित करना है। बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध हैं। अतः उनका उदेश्य सम्पूर्ण जाति का कल्याण करना था। इसलिए जाती, लिंग आदि भेदों से परे सम्पूर्ण प्राणी जगत के कल्याण की भावना बौद्ध धर्म का मूल बिंदु है। बौद्ध धर्म के प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में कहा गया है की इस धर्म उत्पति ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया स्वरुप हुआ था। पूर्वबुद्धयुगीन काल में स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय थी। नारी को प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष से हिन् समझा जाता था। अतः नारी के सन्दर्भ में इस प्रकार की धारणा को महात्मा बुद्ध ने निर्मूल घोषित कर दिया। उनका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार जन्म पाता है। जिससे बौद्ध धर्म में पुत्र की अनिवार्यता समाप्त कर दी गयी।

बुद्ध द्वारा स्त्रियों को भिक्षुणी जीवन में प्रवेश देने का निर्णय पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रति हिन् दृष्टिकोण को बदल कर रख दिया। स्त्रियों के सम्बन्ध में बौद्ध धर्म में दो प्रकार की विचारधारा दृष्टिगोचर होती है जिसका सम्बन्ध महात्मा बुद्ध के विचारों से होता है। जहाँ एक और बुद्ध द्वारा स्त्रियों के प्रति संदेहात्मक वक्तव्य दिए वहीं कुछ स्थानों पर बुद्ध स्त्रियों की प्रसंशा करते प्रतीत होते हैं। इन्होंने स्त्रियों के संघ में प्रवेश के सम्बन्ध में संकोच प्रदर्शित किया था, परन्तु मौसी गौतमी और आनंद के प्रयास से उन्होंने स्त्रियों को संघ में प्रवेश करने की अनुमति संकोच करते हुए प्रदान की। इस प्रकार बौद्ध भिक्षुणी संघ का उद्भव हुआ तथा बौद्ध धर्म संघ में नारी का प्रादुर्भाव

हुआ। बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बौद्ध काल तक गठित बौद्ध भिक्षुणी संघ में लगभग 1500 स्त्रीयाँ शामिल हो चुकी थीं जिसमें सैकड़ों आदर्श बौद्ध महिलाएँ थी जिनका जीवन वृत्त और जीवन दर्शन का चित्रण पाली के थेरी–गाथा में मिलता है।

बौद्ध धर्म के दार्शनिक विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में स्त्रियों को भिक्षुणी जीवन में प्रवेश की अनुमति न देने के पीछे की मूल चिंता समाज को लेकर थी। क्योंकि भिक्षुणियों को समाज का उचित समर्थन था। अतः बुद्ध समाज के विरुद्ध जाकर भिक्षुणी संघ की स्थापना करते तो भिक्षुणियों को समाज के विरोध का सामना करना पड़ता और उन्हें भिक्षा तक प्राप्त नहीं होती उनका जीवन कष्टदायी हो सकता था। इन बातों के पीछे की मूल वजह यह है कि भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है। ऐसे में स्त्रियों को पूर्ण स्वंतंत्रता प्राप्त नहीं थी। बुद्ध का उद्देश्य था समाज के उचित समर्थन के साथ कार्य करना क्योंकि भिक्षु संघ का जीवन भिक्षा और दान पर ही निर्भर था। और ऐसा भी नहीं था कि भिक्षु संघ की स्थापना कोई नया कार्य था। इससे पहले भी साधु साध्वी का अस्तित्व समाज में विद्वमान थे। लेकिन भिक्षुणी संघ का अस्तित्व जैन धर्म को छोड़कर अन्य किसी धर्म में दृष्टिगोचर नहीं होता है। अतः भिक्षुणी संघ की स्थापना करके महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों के जीवन को एक नयी दिशा प्रदान की। जिसका प्रमाण थेरीगाथा से लिया जा सकता है। इसमें 500 से भी अधिक गाथाएं है जो स्त्रियों के अधिकारों से परिचय करवाती है। इन गाथाओं के माध्यम से स्त्रियों की सामाजिक गतिविधि ,उनके अनुभव उनके हृदय से निकले उदगार हैं। बौद्ध धर्म त्रिपिटक ग्रंथों में नारियों की कार्य–कुशलता की सरहाना की गयी है। त्रिपिटक के सुत्तपिटक के प्रथम दीघ निकाय के लक्खन सुत्त में चक्रवर्ती राजाओं के सात रत्नों में से एक स्त्री रत्न का भी उल्लेख है। इसी प्रकार दीघनिकाय के सिगोलवाद सुत्त में कहा गया है कि माता–पिता को पूर्व दिशा मानकर प्रतिदिन व्यक्ति को प्रणाम करना चाहिए। यहाँ सम्बोधन में भी माता अर्थात स्त्री को ही पहले स्थान दिया गया है। महानिर्वाण सुत्त में भगवान् बुद्ध वैशाली की गणिका आम्रपाली के निमंत्रण को स्वीकार कर संघ सहित उसके यहाँ भोजन करने जाते हैं। कुछ समय उपरांत वही गणिका महात्मा बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होकर निर्वाण प्राप्त कर लेती है।

बौद्ध धर्म में महात्मा बुद्ध के समय में केवल संभ्रांत तथा राजा महाराजाओं के कुल की कन्याएँ तथा स्त्रियाँ ही भिक्षुणी नहीं बनी थी बल्कि समाज के हर वर्ग तथा अत्यंत दुखी स्त्रियों को भी सम्मान देते हुए संघ में शामिल किया गया। जिसके सम्बन्ध में अनेक उदाहरणों का उल्लेख प्राप्त होता है – **प्रथम उदाहरण**, भिक्षुणी पटाचारा श्रावस्ती नगरसेठ की इकलौती पुत्री थी। उसने अपने माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर अपने नौकर से विवाह कर घर छोड़ दिया। उसके दो पुत्र हुए कुछ वर्ष के उपरांत उसे अपने माता–पिता से मिलने की इच्छा हुई और वह अपने पति और दोनों पुत्रों के साथ पैदल निकल पड़ी। इसी दौरान घने जंगल मिले और उसके पति को सर्प ने डस लिया और उसकी मृत्यु हो गयी। फिर एक पुत्र को बाज उठा कर ले गया तथा दूसरा पुत्र नदी में दुब कर मर गया। किसी तरह वह श्रावस्ती पहुंची तो पता चला की उसके माता–पिता भरी वर्षा के कारण मकान गिरने से दबकर मर गए। इतने दुखों ने उसे पागल बना दिया था। फिर एक दिन श्रावस्ती में बुद्ध अपने समूह के साथ विहार कर रहे थे तभी पटाचारा उनके नजदीक पहुंची तो शास्ता ने कहा– बहन अपने वास्तविकता का स्मरण करों। तब उसे धयान आया की उसके शरीर पर वस्त्र नहीं है। तभी किसी ने उसके शरीर पर वस्त्र डाल दिया। तब उसने बुद्ध से विनती की भंते आप मेरे आश्रय स्थल एवं शरण स्थल बनने की कृपा करें। इसके उपरांत पटाचारा प्रवार्जित होकर भिक्षुणी बन गयी और अलप समय में ही अहर्त को प्राप्त हो गयी। **द्वितीय**, एक दरिद्र परिवार में जन्मी सुमंगलता ने प्रव्रजित होने के बाद एक दिन अपने कष्टपूर्ण पारिवारिक जीवन का प्रत्यक्षेपण करते हुए तथा अपने संवेग को स्वीकारते हुए अधिक तीव्र पुरुषार्थ की और अग्रसर होते हुए परम ज्ञान को प्राप्त किया।

तृतीय, भिक्षुणी सुमना को भगवान् बुद्ध ने योगबल से प्रकट होकर उसे कहा– ''सांसारिक जीवन के सभी तत्वों को क्या होते दुःखमय देखा नहीं ? तो फिर पुनर्जन्म की आसक्ति मत करना। संसार की आसक्ति को त्याग कर तू परम शांति प्राप्त करके विचार।'' इस प्रकार सुना ने प्रवज्या ग्रहण की। **चतुर्थ**, कौशल जनपद की दरिद्र ब्राह्मण कन्या का विवाह दरिद्र कुबड़े पति से हुआ था। उसने अपने पति से निवेदन किया की उसे गृहस्थ जीवन में रूचि नहीं है। अतः आज्ञा लेकर आत्म–सयंम का अभ्यास किया तथा प्रवज्या ग्रहण की। इस प्रकार अनेक ऐसे उदाहरण वर्णित हैं जो इस बात को प्रमाणित करते हैं की प्रारम्भ से ही भिक्षुणी जीवन की प्राप्ति के लिए किसी पकार का कुल या जाती का मापदंड नहीं रहा है। अतः बुद्ध ने नारियों को संघ में सम्मिलित कर नारी के प्रति बौद्ध धर्म की उदारता का परिचय दिया।

महात्मा बुद्ध के जीवन में भी स्त्रियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा उन्हें अपने अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग प्रदान किया। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

1. **महाप्रजापति गौतमी** : महात्मा बुद्ध के जीवन में, सर्वप्रथम नाम आता है महाप्रजापति गौतमी का। बुद्ध की माता महामाया की मृत्यु के पश्चात उनका लालन पालन उनकी मौसी गौतमी ने किया और अपने पुत्र ननद को दाई को सौंप दिया। अर्थात महाप्रपति गौतमी ने बुद्ध का पालन–पोषण के द्वारा बुद्ध को उनके लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग दिया।

2. **यशोधरा** : दूसरा नाम आता है यशोधरा का, यशोधरा तथागत (महात्मा बुद्ध का पूर्व नाम) की पत्नी थी। राहुल उनका पुत्र था। बुद्ध ने इन दोनों को त्यागकर ज्ञान प्राप्ति हेतु निकल पड़े। अतः यशोधर के इस त्याग ने बुद्ध जैसा करुणामय व्यक्तित्व विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। अंत में यशोधरा ने भी विलासी जीवन को त्यागकर सादगीपूर्ण जीवन को अपना लिया और प्रवज्या ग्रहण की।बुद्ध की माता तथा पत्नी के अलावा भी कुछ अन्य नारियाँ भी थी जिन्होंने बुद्ध के जीवन को नया आकर देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

3. **सुजाता** : सुजाता बुद्ध के बोधिसत्व की प्राप्ति में सहायता करने वाली एक अन्य नारी थी। उसने तरुणी होने पर एक बरगद से यह प्रार्थना की थी, ''यदि में समान जाती के कुल घर

में जाने से पहले ही गर्भ में पुत्र प्राप्त करुँगी तो प्रतिवर्ष के लाख के खर्च से बलिकर्म करुँगी। ''जब उसकी इच्छा पूर्ण हुई तो उसने बैसाख पूर्णिमा को खीर बनायीं और थल को कपडे में लपेटकर वृक्ष के नीचे रखने जा रही थी तभी उसने देखा बुद्ध वहां बैठे हुए थे उसने उन्हें वृक्ष देवता समझकर थल को नीचे रखा और वंदन किया की वे इस खीर को ग्रहण करें। सुजाता ने पात्र सहित खीर को उन्हें अर्पण किया। इस प्रकार सुजाता की खीर खा कर कृशकाय हो चुके बुद्ध ने पुनः अपनी शक्ति और ऊर्जा के सेहत स्वास्थ्य को प्राप्त किया और पुनः अपने लक्ष्य की प्राप्ति की और निकल पड़े।

4. किसागौतमी : महात्मा बुद्ध जब अपने पुत्र के जन्म के उपरांत शहर भ्रमण के लिए निकले तो एक क्षत्रिय कन्या किसागौतमी उन्हें देख कर उन पर मोहित हो गयीं और उसने कहा–

परम शांत माता सोइ, परम शांत पितु सोइ ।
परम शांत नारी सोइ, जासु पति अस होय ।।

अर्थात् वह कहती है, की इस प्रकार के स्वरुप को देखते ही माता का ह्रदय परम शांत होता है, पत्नी का ह्रदय परम शांत होता है। यह सुन कर बुद्ध सोचते हैं कि किसके शांत होने पर ह्रदय परम शांत होता है ? तब उन्हें ख्याल आता है कि द्वेष अग्नि के शांत होने पर मोह अग्नि शांत होता है। मोह अग्नि के शांत होने पर अभिमान आदि शांत होता है। तब वह विचारतें है कि यह मुझे प्रिय वचन सुना रही है और में निर्वाण को खोजता फिर रहा हूँ। अतः इस घटना के उपरांत उन्होंने मान लिया कि यही वह स्त्री है जिसने मुझे निर्वाण मार्ग दिखया है। यही मेरी गुरु हैं। इस प्रकार इस कन्या ने बुद्ध के जीवन को एक नयी दिशा प्रदान की।

5. गणिकाएँ व् नृत्यकाएँ : तथागत के पिता राजा शुद्धोधन को जब यह पता चला कि तथागत गृह त्याग का मन बना रहे हैं तो उन्होंने गणिकाओं और नृत्यकाओं को नियुक्त किया ताकि वे गौतम को गृहस्थ जीवन में बंधे रखे। अतः एक दिन रात्रि में गौतम के सो जाने के उपरांत वे भी सो गयीं। गौतम ने रात्रि में नींद खुलने के दौरान जब उन स्त्रियों को देखा तो पाया कि किसी के मुँह से कफ निकल रहा था, किसी के मुँह खुले हुए थे, कोई बर्रा रही थी। ऐसी स्थिति में उन स्त्रियों को देखकर उनका मन प्रवज्या के लिए और आतुर हो गया। इस प्रकार जाने–अनजाने इन स्त्रियों ने गौतम को बोधिसत्व की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

स्पष्ट है, महात्मा बुद्ध के जीवन में स्त्रियों के विभिन्न रूपों ने समय–समय पर न केवल सहयोग किया बल्कि कई स्थानों पर मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाई।

निष्कर्ष : उपरोक्त बातों के दार्शनिक चिंतन से यह प्रतीत होता है की यह सर्वथा सत्य है की "स्त्री जीवन की जननी है, आधारशिला है।" उनके सहयोग के बिना पुरुष किसी भी पथ पर सफल नहीं हो सकते। महात्मा बुद्ध के जीवन में भी स्त्री का सहयोग माता, पत्नी तथा अन्य स्त्रियों के रूप में प्राप्त होता रहा। तभी बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ। गौतम बुद्ध का जन्म ऐसे समय पर हुआ था जब नारी जगत तरह–तरह की पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक परपम्पराओं के अन्धविश्वासों से बंधा था। इस अन्धविश्वासी परम्परावादी समाज पर बुद्ध ने अपने विचारों से सीधा प्रहार किया। बौद्ध धर्म ने समाज में व्याप्त अनेक रूढ़िवादी परम्पराओं को तोडा। सत्य तो यह है की बौद्ध धर्म ने महिला सशक्तिकरण की नींव रखी।

स्पष्ट है, कि बुद्ध के महासंघ में जाति तथा वर्ण का भेदभाव नहीं है, बल्कि स्त्री का महत्व है। बुद्ध ने जाती और वर्ण के भेदभाव को ही नहीं मिटाया बल्कि स्त्री को पुरुष के समकक्ष लाने का प्रयास किया। भगवान् बुद्ध का मानना था कि मानसिक धरातल पर स्त्री और पुरुष दोनों समान हैं। बौद्ध धर्म में कोई भी कन्या अपनी इच्छा से भिक्षुणी बनकर अविवाहित रह सकती हैं। इसी तरह बुद्ध के मार्गदर्शन में अनेक प्रबुद्ध महिलाओं का प्रादुर्भाव हुआ – किसागौतमी, भद्दा कुण्डलकेशा, सामा, उब्बरी, धम्मदिन्ना, खजुतारा, पटचारा, आम्रपाली आदि। इन सभी स्त्रियों ने अहर्त पद प्राप्त किया और समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। अतः बौद्ध दर्शन तथा बुद्ध के जीवन में नारी का योगदान अतुल्य रहा।

सन्दर्भ :

- पुनिया डॉ. ऋतू , प्राचीन बौद्ध परम्परा में नारी, प्रथम संस्करण, लिटरेरी सर्कल, 2021, जयपुर।
- संत डॉ. वंदना, बौद्ध काल की स्त्रियां और बौद्ध धर्म के विकास में उनका योगदान, प्रथम संस्करण, 2018, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली।
- नरसू, पी. लक्ष्मी, बौद्ध धर्म और नारी, सम्यक प्रकाशन, 2017, नई दिल्ली।
- राव, विनय कुमार, बौद्ध कला में नारी, प्रथम संस्करण, स्वाति प्रकाशन, 2006,दिल्ली।
- मालविका, कुमारी विद्यावती, आदर्श–बौद्ध–महिलाएँ, प्रथम संस्करण, भारतीय महाबोधि सभा, बुद्धाब्द 2466, बनारस।

6. SAMBODHI] Bodhgaya] Bi&lingual Annual Publication of the Maha Bodhi Society of India] Buddhgaya Centre] Gaya] Bihar] 2019 ।
7. 38th International Buddhist Conference & 2013.
8. उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, प्रथम संस्करण, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, 2010।
9. पिपलायन मधुकर, बौद्ध महिलाओं के प्रेरणा–प्रसंग, प्रथम संस्करण, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003।
10. सिंह वी. एन., सिंह जन्मेजय, नारीवाद, RAWAT PUBLICATION] 2012] JAIPUR